



पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़ भारत
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur Chhattisgarh, India
Estd-1964 – recognized by UGC U/s 2(f) and 12 (B)
NAAC “A” Grade

CRITERION-III

EVIDENCE(S), AS PER SOP

METRIC No. 3.4.6	Number of books and chapters in edited volumes published per teacher during the last five years
<ul style="list-style-type: none">• E-copy of the cover page, content page or first page of the publication indicating ISBN number and year of publication for books/chapters and conference proceedings• Web-link of research papers by title, author, Department/ School/ Division/ Centre/ Unit/ Cell, name and year of publication	

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1	छत्तीसगढ़ एक दृष्टि में	संकलित	09-59
2	छत्तीसगढ़ का इतिहास	डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र/ डॉ. लक्ष्मीधर झा	61-192
3	छत्तीसगढ़ पुरातात्विक उत्खनन	डॉ. शिवाकांत बाजपेयी	193-207
4	छत्तीसगढ़ भूगोल	डॉ. एल.एन. वर्मा	209-284
5	छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था और आर्थिक भूगोल	माधव हरदेवी	285-467
6	छत्तीसगढ़ पर्यटन	संकलित	469-484
7	छत्तीसगढ़ जनजाति	डॉ. अशोक प्रधान/ डॉ. शैलेन्द्र कुमार वर्मा	485-539
8	छत्तीसगढ़ अनुसूचित जाति	संकलित	541-544
9	छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक स्वरूप	डॉ. हीरालाल शुक्ल	545-618
10	छत्तीसगढ़ के साहित्यकार	डॉ. सुशोभ त्रिवेदी	619-654
11	छत्तीसगढ़ी साहित्य	संजीव तिवारी	655-676
12	छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक व्यक्तित्व	डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र/ डॉ. लक्ष्मीधर झा	677-703
13	छत्तीसगढ़ जनसंख्या	संकलित	705-714

समग्र छत्तीसगढ़

28

छत्तीसगढ़ जनजाति

डॉ. अशोक प्रधान

डॉ. शैलेन्द्र कुमार वर्मा

समग्र छत्तीसगढ़ 485



जनजाति

अनेक कारणों से भारत में मानव समाज का एक समूह पर्वतीय क्षेत्रों में बाकर निवास करने लगा। कालांतर में यह समूह विकास क्रम में दुर्गम स्थानों में निवास एवं दूरी के कारण निरंतर पिछड़ते चला गया। क्योंकि विकास का प्रकाश सम्यक रूप से उन तक पहुँच नहीं पाया। वर्तमान में भी मानव समाज का यह हिस्सा सभ्यता एवं विकास के जिन सोपानों पर खड़ा है निश्चित रूप से वह विकास के मुख्य धारा से दूर है। इन्हीं समुदायों को आदिवासी, वनवासी, वन्यजाति, आदिमजाति एवं जनजाति के नाम से संबोधित किया जाने लगा। जबकि प्रत्येक समुदाय का अपना स्वयं का नाम है। मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से जनजाति शब्द को प्रमुखतया स्वीकार किया जाने लगा। 'जनजाति' अंग्रेजी के "TRIBE" शब्द का हिन्दी पर्याय है जो भारतीय संविधान के लागू होने के बाद विशेष रूप से प्रचलित हुआ है। जनजाति को भिन्न-भिन्न विषय के विद्वतजनों ने अपने-अपने अनुसार समझाने का प्रयास किया है। परंतु, प्रत्येक जनजाति को किसी एक परिभाषा के द्वारा समझाने में सफलता प्राप्त नहीं हुई है।

गिल्गिन एवं गिलिन के अनुसार- 'जनजाति किसी भी ऐसे स्थानीय समुदायों के समूह को कहा जाता है जो एक सामान्य भू-भाग पर निवास करता हो, एक सामान्य भाषा बोलता हो, और एक सामान्य सांस्कृतिक व्यवहार करता हो।'

डी. एन. मजूमदार ने 'जनजाति' को परिवारों का संकलन कहा है जिसका अपना एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू-भाग में रहते हैं, सामान्य भाषा बोलते हैं, विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में कुछ निषेधों का पालन करते हैं तथा एक सुनियोजित आदान-प्रदान की व्यवस्था का विकास करते हैं।

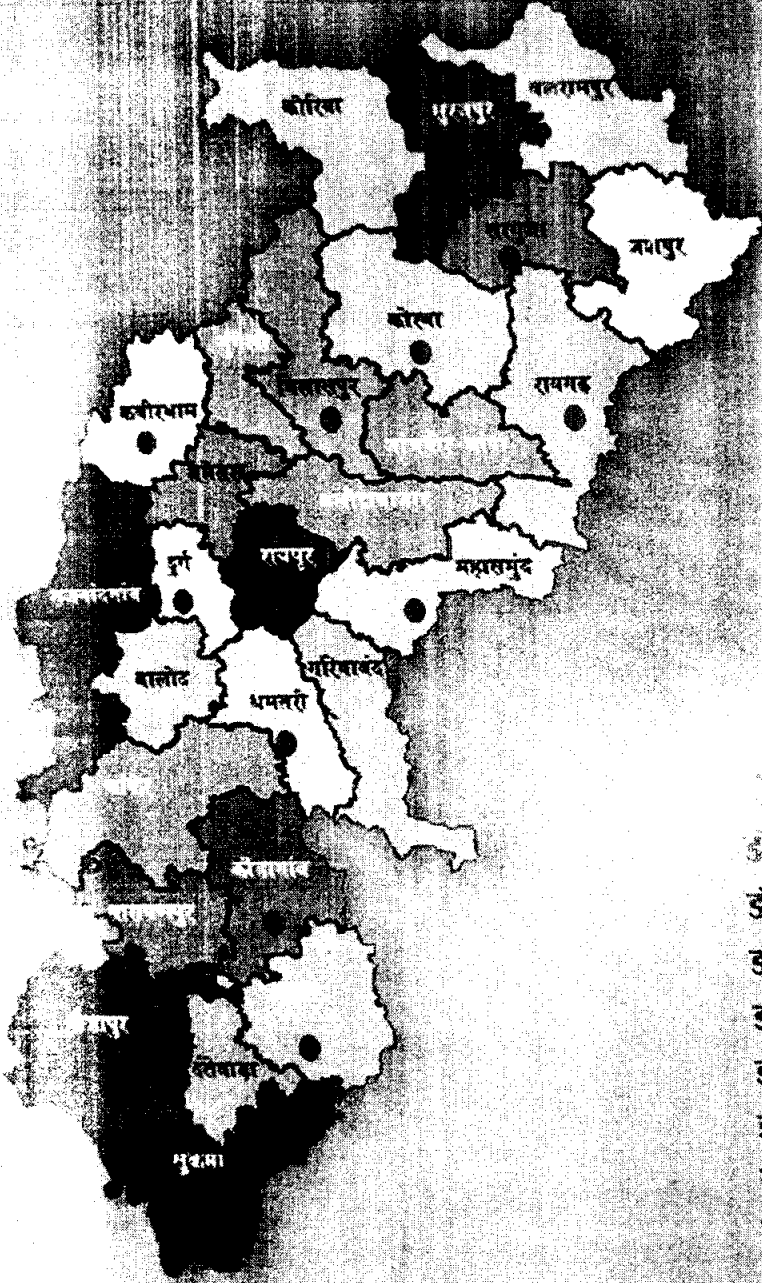
मानवशास्त्र की एक पुस्तक 'नोट्स एण्ड क्लेरिज' में जनजाति को 'एक ऐसा समुदाय बताया गया है, जो किसी विशेष भू-स्थान का स्वामी हो, जो राजनैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से श्रृंखलाबद्ध स्वायत्त शासन चला रहा हो।'

इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया के अनुसार जनजाति ऐसे परिवारों का संकलन है जिसका एक सामान्य नाम है, सामान्य भाषा है तथा जो सामान्य भू-भाग में बसे हुए हैं अथवा उसमें बसे होने का दावा करते हैं तथा वे प्रायः अन्तर्विवाही नहीं होते, चाहे पहले ऐसी प्रथा उसमें पायी जाती रही हो।'

उपरोक्त परिभाषाओं को सामान्यतः जनजाति शब्द को समझने के प्रयास में दिया जाता है। परंतु जनजातीय समाज में पाए जाने वाली विभिन्नता और परिवर्तन के



समग्र छत्तीसगढ़



डॉ. शिवलाल शुक्ल
डॉ. रामेन्द्रनाथ मिश्र
डॉ. सुशील त्रिवेदी
डॉ. एल.एन. वर्मा
डॉ. अशोक प्रधान
डॉ. शिवाकांत बाजपेयी
डॉ. लक्ष्मीधर झा
माधव हरदेवी
संजीव तिवारी
डॉ. शैलेन्द्र कुमार वर्मा

छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी

७९

भाग—8

छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जातियाँ

लेखक

प्रो. अशोक कुमार प्रधान

(प्रोफेसर)

मानवविज्ञान अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

एवं

डॉ. शैलेन्द्र कुमार

(सहायक प्राध्यापक)

मानवविज्ञान अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

समग्र छत्तीसगढ़

179

पर्यावरण प्रदूषण
समस्या एवं निदान



डॉ. एस.के. जाधव

अदिती गीतम (रॉय)

छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रंथ-निर्माण योजना एवं अनुसूचित जाति कल्याण विशेष योजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी के तत्वावधान में रचित एवं प्रकाशित।

संस्करण (प्रथम) : 2017

खगोल विज्ञान : जिज्ञासा और समाधान

मूल्य : रुपये 220/- (दो सौ बीस रुपये मात्र)

© सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

ISBN : 978-93-82313-27-4

प्रकाशक : छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर,
सामुदायिक भवन के सामने,
रायपुर 492010 (छत्तीसगढ़)

आवरण/कंपोजिंग: अनिल कश्यप, रायपुर

मुद्रक : महावीर ऑफसेट प्रिंटर्स
रायपुर (छत्तीसगढ़)

Chapter 4

Arbuscular Mycorrhizal Fungi and Tolerance of Salt Stress in Plants

Bhawna Saxena, Kamlesh Shukla, and Bhoopander Giri

Abstract Soil salinity has become a serious land degradation problem and is increasing steadily in many parts of the world, particularly in arid and semiarid areas. Increased salinization of arable land is expected to have devastating global effects and would lead to 30% land loss within the next 25 years and up to 50% by the middle of the twenty-first century. Plants growing in saline conditions generally last to three distinct stresses, ionic, osmotic, and oxidative. The toxic effects of specific ions such as Na^+ and Cl^- , prevalent in saline soils, disrupt the structure of enzymes and other macromolecules, damage cell organelles, disrupt general metabolic activities, inhibit protein synthesis, and induce ion deficiency. Plants exposed to low water potential face the problem of physiological drought condition. Moreover, salinity creates nutrient imbalance in the plant due to decreased and differential uptake of nutrients and/or their translocation to the shoot and leaf tissues, rendering the plants weak and unproductive. Arbuscular mycorrhizal fungi (AMF) are ubiquitous soil microorganisms that build up symbiotic associations with the majority of higher plants, establish a direct physical link between soil and plant roots, constitute an integral component of the natural ecosystems, and predominantly exist in the saline environment. The extraradical hyphae of AMF run several

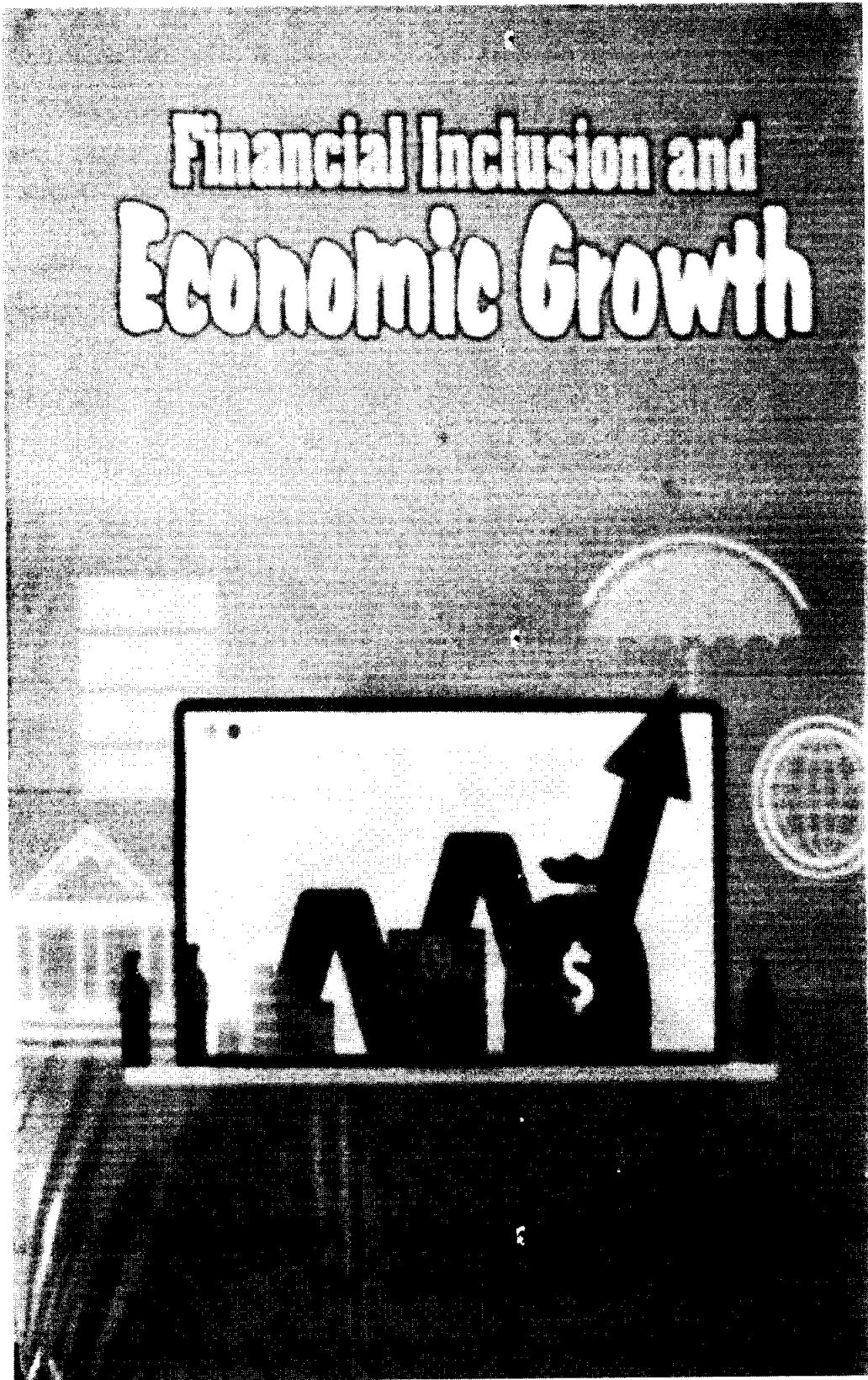
17
Tulasi Satyanarayana
Sunil K. Deshmukh
B. N. Johri *Editors*

Developments in Fungal Biology and Applied Mycology

€  Springer

22

Financial Inclusion and Economic Growth



22

20




Developments in Fungal Biology and Applied Mycology pp 501-523 | [Cite as](#)

Occurrence and Distribution of Mushrooms in Semi-evergreen Sal (*Shorea robusta*) Forest Chhattisgarh, Central India

Authors

Authors and affiliations

Kamlesh Shukla, Bhoopander Giri, R. V. Shukla 

Chapter

First Online: 30 December 2017

1.1k

Downloads

Abstract

Chhattisgarh is an important state covering largest semi-evergreen Sal (*Shorea robusta*) forest area in the country, where the Achanakmar–Amarkantak Biosphere Reserve (ABR) harbours a rich mushroom wealth in association with the varieties of tree species. Mushrooms, an

72

Declining Share of Agriculture and Allied Services in India's GDP

Causes and Remedies (1960-61 to 2013-14)

A.K. PANDEY, RADHA PANDEY AND RANU AGRAWAL

Importance of Agriculture and Allied Services: India is mainly an agricultural country. Agriculture is the most important occupation for most of the Indian families. In India, agriculture contributes about 16.0% of total GDP and 10.0% of total exports. Over 60% of India's land area is arable making it the second largest country in terms of total arable land. Agricultural products of significant economic value includes rice, wheat, potato, tomato, onion, mangoes, sugar-cane, beans, cotton, etc. Agriculture is the backbone of Indian economy. Though, with the growth of other sectors, the overall share of agriculture on GDP of the country has decreased. Still, Agriculture continues to play a dominant part in the overall economic scenario of India.

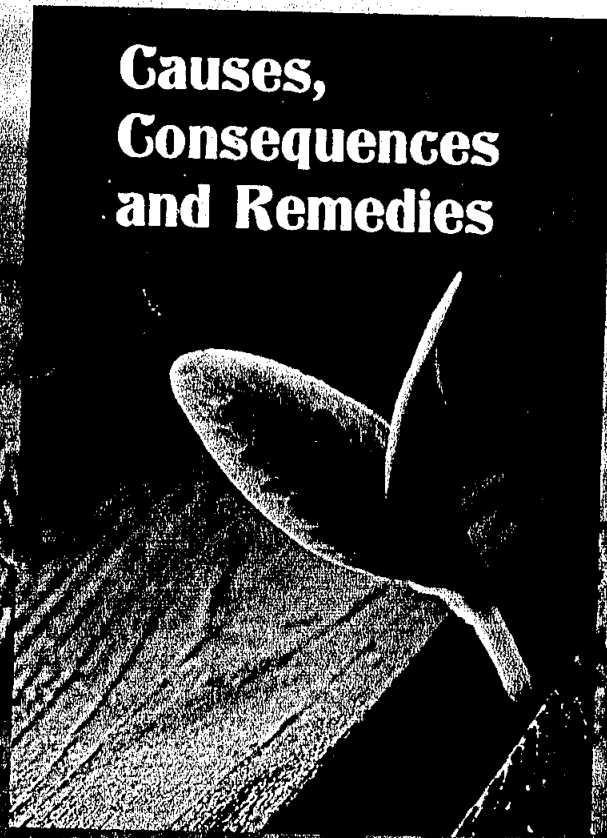
Indian economy is classified in three sectors – Agriculture and allied, Industry and Services. Agriculture sector includes Agriculture (Agriculture proper and Livestock), Forestry and Logging, Fishing and related activities. Industry includes Manufacturing (Registered and Unregistered), Electricity, Gas, Water supply, and Construction. Services sector includes Trade, repair, hotels and restaurants, transport, storage, communication and services related to broadcasting, Financial, real estate, Community, and social services

Agriculture plays a vital role in India's economy. Over 59% of the rural households depend on agriculture as their principal means of livelihood. Agriculture, along with fisheries and forestry, is one of the largest contributors to the Gross Domestic Product (GDP).

(24)

Agriculture Sector in Inclusive Growth

**Causes,
Consequences
and Remedies**



Dr. Sanjay Kumar

Other

17
03

Up TO 25000

Frequency

Percentage

WU
EATCKR/M/1998/Dissemination Time Allocation and Allocation
Investment(KS)

Agriculture Sector in Inclusive Growth

and extension, may be the most suited for promoting new varieties of crops and seeds. But other thrusts, such as the livelihoods component of off-farm employment may also be

CONCLUSION

It is seen in non-farm employment in rural areas in terms of its share in rural employment. Agriculture continues to be the largest employer of rural workers, providing employment to about 60% of the male workers and 70% of the female workers. The transition of workers from agriculture to non-farm sector has been fast in the recent years. This is self-employed households in the agricultural sector is the labour force, indicating a rise in the number of marginal farmers working as labour. The trend has been shown that agricultural wages have grown over farm wages. The wage determinant analysis shows that agricultural productivity influences the returns to agricultural labours. The share of agricultural workers is high with agricultural wages. It is likely that the agricultural sector and agricultural sector will continue to improve rural wages, which in turn, will have a positive impact on livelihood and economic security in India.

REFERENCES

World Bank (27 August 2013), "Inclusive Growth revisited: Evolution". VoxEU.org. Centre for Economic Policy Research, 13 January 2015.

World Bank (2015), "Inclusive Growth: Measurement and Determinants" (PDF). Asia Pacific Department: International Monetary Fund, January 2015.

Lundstrom, Susanna, "What is Inclusive Growth?" (2009). February 10, 2009.

World Bank (2015), "Inclusive Growth Analytics: Framework and Application" Working Paper Series 4851, The World Bank.

World Bank (2015), "Inclusive Growth and Development... Inclusive Growth with Development?", MPRA 33182.

Almeida, Aquel (March 2013), "Inclusive Growth: A Framework for Brazil" (PDF). Working Paper, 104. Brazil: *International Journal of Inclusive Growth*. ISSN 1812-108X. Retrieved 13 January 2015.

5

Role of Agricultural Sector in the Inclusive Growth

PRAGATI KRISHNAN AND ARCHANA SETHI

INTRODUCTION

The discovery of agriculture was the first big step toward modern life.

— Aristotle

The pre-independence period was a period of near stagnation for the Indian economy. At the time of independence, the Indian economy was caught up in a vicious circle of poverty. The condition of Indian economy at the eve of independence as we inherited from the British in 1947 focuses on two basic questions: the first is whether the Indian economy was a stagnant or a vibrant economy? and second is what was the condition of a developing economy?

Like every developing country, the main occupation in India is agriculture. Agriculture is the mainstay of India because of its high share in employment and livelihoods. Agriculture is the most important sector of the Indian economy from the perspective of poverty alleviation and employment. During the pre-British period, the condition of India was not at all satisfactory. India's economy under colonial rule was immensely rural and agricultural in nature. 90% of the country's population lived in villages and depended on agriculture for living. Even though the large proportion of the population was engaged in agriculture, the country was not self-sufficient in food and raw materials for industry. The landless labourers and the adverse effects of partition are some of the main reasons for the stagnation of the Indian agricultural system.

Conferences > 2017 International Conference

Optimal quantization table generation for efficient satellite image compression using teaching learning based optimization technique

Publisher: IEEE | Cite This | PDF

Vikrant Singh Thakur | Shubhrita Gupta | Kavita Thakur | All Authors

1 Paper Citation | 141 Full Text Views



- Abstract
- Authors
- Figures
- References
- Citations

Abstract: Communication of the satellite images plays a crucial role in many important applications such as change detection, land cover classification, weather prediction etc. The increase in the demand of satellite images over the band limited channel requires good quality compression tools. Currently, the compression standard developed by Joint Photographic Experts Group (JPEG) is the widely used product for the compression of satellite images. Moreover, one of the important elements which influence the performance of JPEG compression standard is the nature of quantization table. The compression ratio and the decompressed image quality are determined all-together by the quantization table, and hence, the table strongly influences the whole compression performance. The author aims to generate better quantization tables to enhance the compression performance to achieve higher compression ratios while preserving high reconstruction quality for satellite images. A Teaching Learning based Optimization (TLBO) technique is employed to promote higher compression performance for satellite images. The aim is to identify optimal quantization tables that contribute to better compression efficiency in terms of image quality indexes. Peak

Need Full-Text
access to IEEE Xplore for your organization?
CONTACT IEEE TO SUBSCRIBE >

IEEE International Conference on **COMMUNICATIONS**
16-20 May 2022
Seoul, South Korea
Hybrid: In-Person and Virtual Confe
Intelligent Comm... Feedback



Handwritten marks: a circled '38' and a circled '36'.



Handbook of Ecomaterials pp 1055-1101 | Cite as
Advances in Polymer-Based Photovoltaic Cells: Review of Pioneering Materials, Design, and Device Physics

Authors Authors and affiliations
Sanjay Tiwari, Tanya Tiwari, Sue A. Carter, J. Campbell Scott, J. V. Yakhmi

Reference work entry
First Online: 14 February 2019
174 Downloads

Abstract

Photovoltaics, which directly convert solar energy into electricity, offer a practical and sustainable solution to the challenge of bridging the global demand and supply gap in energy along with carbon-neutral, renewable energy source. Recently significant progress in organic photovoltaic materials has been made to overcome technological and material barriers in order to develop organic or polymeric photovoltaic devices (OPVs or PPVs) with cost-effective efficiency with respect to the inorganic counterparts and to make them commercially viable for applications as flexible solar modules, semitransparent solar cells in windows, and photon recycling in liquid-crystal displays. Organic photovoltaics technology is rapidly emerging as a transformative technology with meliorating cell efficiency (currently ~13.2%), encouraging



(31)
(22)

Quantum dot as light harvester nanocrystals for solar cell applications

M. Patel, S. Sahu, A. K. Verma, P. Agnihotri, Surya Prakash Singh, Ramanuj Narayan, Sanjay Tiwari

In this article we are reviewing the application of quantum dot nanocrystals as light harvesters for solar cell applications. Three foremost ways to make use of semiconductor quantum dots in solar cells are metal-semiconductor photovoltaic cell, polymer semiconductor solar cell and quantum dot sensitized solar cell. Band energies can be controlled by size change in quantum dots which gives new ways to control the response and efficiency of the solar cell. Quantum dot solar cell reduces heat waste by multiple electron generation (MEG) and converts up to three electrons per photon. Therefore, more than 100% quantum efficiency is possible for quantum dot solar cells. Furthermore Quantum dot forms one or more intermediate bands (IBs) in the host semiconductor bandgap, enabling two-step absorption of sub-band gap photons. Since the IBs are electrically isolated from Valance Band and Conduction Band, their introduction increases short circuit current (I_{sc}) and keeps open circuit voltage (V_{oc}) unreduced.

Keywords

Nanocrystals, Solar Cell, Quantum Dot, Multiple Electron Generation, Intermediate Bands

Published online 5/2/2017, 17 pages

DOI: <http://dx.doi.org/10.21741/9781945291371-4>

Part of Recent Advances in Photonics

References

- (1) Kamat, P. V., 2006, Harvesting photons with carbon nanotubes, *Nano Today*, 1(4), pp. 20-27. [https://doi.org/10.1016/S1728-0134\(06\)70113-X](https://doi.org/10.1016/S1728-0134(06)70113-X)
- (2) Garibhai, A., Rath, A. K. and Pal, A. J., 2011, To make polymer quantum dot hybrid solar cells NIR active by increasing diameter of PbSn nanoparticles, *Solar energy materials and solar cells*, 95(2), pp. 651-656. <https://doi.org/10.1016/j.solmat.2010.09.024>

Tunable Properties and Diverse Applications \$125.00

Bioinspired Nanomaterials \$125.00

Recent Advancements in Geotechnical Engineering \$0.00 - \$125.00

Digital Methods in Developing Textile Products for People with Locomotor Disabilities \$65.00

Alternative Concrete - Geopolymer Concrete \$75.00

Advances in Bricks and Blocks for Building Construction \$75.00

Sustainable Corrosion Inhibitors \$85.00

Structure and Properties of Lengthy

38

Description

Advancement in simulation and modeling of organic solar cells

Pooja Agnihotria, M.Patel, A.Verma, S.Sahu, Sandeep Pathak, Sanjay Tiwaria

Organic solar cells (OSCs) has recently received a great impulse as it is safe & clean substitute for the existing fossil fuel power plants, can be manufactured by low temperature processes at low-cost with a promising energy balance. During the past years OSCs performance has improved significantly but needs further improvements. Simulations/modelling are powerful tools for optimization of OSCs, reveal new insights, and predict the behaviour, performance, limitations, stability, dependency of OSCs & maximum attainable efficiency. In this paper we review a chain of simulation models (optical/electrical) for modelling state of the art devices, corresponding development in recent years on the basis of device physics and working principle, analyzing photo-absorption, quantum efficiency, short-circuit current, open-circuit voltage and fill-factor of the device to meet photovoltaic needs.

Keywords

Organic Solar Cells, Drift-Diffusion Model, Photo-active Polymer, Non-uniform Generation, Exciton

Published online 8/7/2017, 24 pages

DOI: <http://dx.doi.org/10.21741/9781945291371-11>

Part of Recent Advances in Photovoltaics

References

[1] A. J. Waldau, "PV Status Report 2003", European Commission, EUR 20850 EN, 2003.
 [2] Kallmann H, Pope M. "Photovoltaic effect in organic crystals." J Chem Phys, 1954, 30: 585-586.
<https://doi.org/10.1003/1.1729993>

(39)

Description

Recent advances in polymer solar cells

A. K. Verma, P. Agnihotri, M. Patel, S. Sahu, S. Tiwari

Polymer solar cells belongs to promising class of next-generation photovoltaic, because they hold promise for the realization of mechanically flexible, lightweight, large-area devices that can be fabricated by room-temperature solution processing. High power conversion efficiencies of ~15% in tandem polymer solar cells based on semiconducting polymers are fabricated from solution-processing techniques and have unique prospects for achieving low-cost solar energy harvesting, owing to their material and manufacturing advantages. The potential applications of polymer solar cells are broad, ranging from flexible solar modules and semitransparent solar cells in windows, to building applications and even photon recycling in liquid crystal displays. This review covers the scientific origins and basic properties of polymer solar cell technology, material requirements and device operation mechanisms, while also providing a synopsis of major achievements in the field over the past few years. Potential future developments and the applications of this technology are also briefly discussed.

Keywords

Polymer Solar Cells, Flexible Transparent Solar Cells

Published online 6/2/2017, 11 pages

DOI: <http://dx.doi.org/10.21741/9781945291371-10>

Part of Recent Advances in Photovoltaics

References

- [1] www.ele.com/air
- [2] Papo, Martin, and Charles E. Swenberg. "Electronic processes in organic crystals and polymers." Oxford University Press on Demand, (1999)

- Ferrite - Nanostructures with Tunable Properties and Diverse Applications**
\$125.00
- Bioinspired Nanomaterials**
\$125.00
- Recent Advancements in Geotechnical Engineering**
\$0.00 - \$125.00
- Digital Methods in Developing Textile Products for People with Locomotor Disabilities**
\$65.00
- Alternative Concrete - Geopolymer Concrete**
\$75.00
- Advances in Bricks and Blocks for Building Construction**
\$75.00
- Sustainable Corrosion Inhibitors**
\$95.00



L10

Description

Fill factor analysis of organic solar cell

Rashmi Swami, Sanjay Tiwari

Solar cell is a device used to convert light into electricity. It can be made by organic and inorganic materials. Its most important parameters are open circuit voltage, short circuit current, fill factor and conversion efficiency. This paper is based on the analysis of factors that affect the fill factor of organic solar cell using MATLAB. Fill factor is calculated using conventional organic solar cell model without series and shunt resistances and constant light generated current for two different cases - first using Exponential dark characteristic and second using Polynomial dark characteristic. We get that for exponential V-I relationship, increase in ideality factor n will reduce the fill factor and for polynomial V-I relationship, increase in m will increase fill factor. A large dependence of light generated current I_{ph} on increasing operating voltage would cause a significant drop in fill factor. Increase or decrease in an additional factor would accordingly change fill factor. Dark current can be varied in two ways, one by varying mobility and other by varying injection barrier heights. In both the cases fill factor increases with.

Keywords

Organic Solar Cell, Fill Factor, Ideality Factor, Open Circuit Voltage, HTL, ETL

Published online 8/2/2013, 10 pages

DOI: <http://dx.doi.org/10.21741/9781945291371-12>

Part of *Recent Advances in Photovoltaics*

References

[1] B. K. Crane, F. S. Davids, I. H. Campbell and D. L. Smith, "Device model investigation of bilayer organic light emitting diode", *J. Appl. Phys.*, 82 (2000), 1974. <https://doi.org/10.1063/1.372123>

[2] B. Mazhari, "An improved solar cell circuit model for organic solar cells", *Solar Energy Materials & Solar Cells*, 97 (2013), 1035. <https://doi.org/10.1016/j.solmat.2013.09.017>

Ferrite - Nanostructures with Tunable Properties and Diverse Applications
 \$125.00

Bioinspired Nanomaterials
 \$125.00

Recent Advancements In Geotechnical Engineering
 \$0.00 - \$125.00

Digital Methods in Developing Textile Products for People with Locomotor Disabilities
 \$65.00

Alternative Concrete - Geopolymer Concrete
 \$75.00

Advances in Bricks and Blocks for Building Construction
 \$75.00

Sustainable Corrosion Inhibitors
 \$35.00



41

Description

Efficiency rise in PCDTBT:PC70BM organic solar cell using interface additive

Rashmi Swami, Rajesh Awasthi, Sanjay Tiwari

Low efficiency is one of the biggest problems with organic solar cell. In order to increase the efficiency of bulk hetero-junction organic solar cell we are using interface surfactant additive poly(oxyethylene tridecyl ether) (PTE) with blend photoactive layer. Here we are reporting on the enhanced photovoltaic (PV) effects by means of a polymer bulk hetero-junction (BHJ) layer having PCDTBT as a low-band gap p-donor/HTL polymer and PC70BM as an acceptor/ETL, doped with poly(oxyethylene tridecyl ether) (PTE) which is an interface surfactant additive. For PCDTBT:PC70BM OSC, we recorded 0.886 V open-circuit voltage (VOC), 11.7 mA/cm² short-circuit current density (JSC), 47.3% fill factor (FF) and PCE of 4.9%. For PCDTBT:PCDM/0/PTE organic solar cell, we recorded VOC of 0.904 V, higher values of JSC of 13.8 mA/cm², FF of 48.2% and improved PCE of 6.0% for a PTE concentration of ca. 0.164 wt%. Power conversion efficiency (PCE) reaches to 6.0%, by the addition of PTE to a PCDTBT:PC70BM system which is much higher than a reference device not including the additive (4.9%). Increase in efficiency is because of the increase in lifetime of charge carrier, which is due to the existence of PTE molecules at the interfaces sandwiched between the BHJ photovoltaic active layer and the anode and cathode, in addition to the phase separated BHJ domains interfaces.

Keywords

Organic Solar Cell, PCDTBT, PCDM, PTE, IPCE, Bulk Hetero-junction

Published online 8/22/2017, 8 pages

DOI: <http://dx.doi.org/10.21741/9781945291371-9>

Part of Recent Advances in Photovoltaics

References

Ferrite - Nanostructures with Tunable Properties and Diverse Applications

\$125.00

Bioinspired Nanomaterials

\$125.00

Recent Advancements in Geotechnical Engineering

\$0.00 - \$125.00

Digital Methods in Developing Textile Products for People with Locomotor Disabilities

\$85.00

Alternative Concrete - Geopolymer Concrete

\$70.00

Advances in Bricks and Blocks for Building Construction

\$15.00

Sustainable Corrosion Inhibitors

\$85.00

42

Description

Status and potential of organic solar cells

Rashmi Swami, Sanjay Tiwari

Solar energy is clean and renewable energy which is generated from natural source sun. Solar cells are devices which convert solar energy into electricity, either directly via the photovoltaic effect, or indirectly by first converting the solar energy to heat or chemical energy. Inorganic and organic both types of solar cells are available. Organic solar cell research has developed during the past 30 years, but especially in the last decade it has attracted scientific and economic interest triggered by a rapid increase in power conversion efficiencies. This was achieved by the introduction of new materials, improved materials engineering, and more sophisticated device structures. Though efficiency of organic devices have not yet reached those of their inorganic counterparts (10-24%) the perspective of low cost, low temperature and energy processing, low material requirement, can be used on flexible substrate, can be shaped to suit architectural application, are some advantages of organic solar cell that drives the development of organic photovoltaic devices further in a dynamic way. This paper gives an overview of organic solar cells. The field of organic solar cells profited well from the development of light-emitting diodes based on similar technologies, which have entered the market recently. We review here the current status of the field of organic solar cells and discuss different production technologies as well as study the important parameters to improve their performance.

Keywords

Solar Cells, Organic Electronics, Photovoltaic Devices, Semiconductors, Polymeric Materials

Published online 8/27/2017, 22 pages

DOI: <http://dx.doi.org/10.21741/9781945291371-8>

Part of Recent Advances in Photovoltaics

References

1. Bhattacharya, M. A review on the effect of electron acceptor on the performance of organic solar cells. *Prog. Photovoltaics*, 2017, 25(1), 1-10.

- Ferrite - Nanostructures with Tunable Properties and Diverse Applications**
\$125.00
- Bioinspired Nanomaterials**
\$125.00
- Recent Advancements in Geotechnical Engineering**
\$0.00 - \$125.00
- Digital Methods in Developing Textile Products for People with Locomotor Disabilities**
\$65.00
- Alternative Concrete - Geopolymer Concrete**
\$75.00
- Advances in Bricks and Blocks for Building Construction**
\$15.00
- Sustainable Corrosion Inhibitors**
\$85.00

(93)

Conferences > 2017 International Conference

Analytical study of current density-voltage relation in dye-sensitized solar cells using equivalent circuit model

Publisher: IEEE [Cite This](#) [PDF](#)

Swati Sahu, Mohan Patel, Anil Kumar Verma, Sanjay Tawari **All Authors**

113 Full Text Views



- Abstract**
- Document Sections
- I. Introduction
 - II. Theoretical Modeling
 - III. Model Validation
 - IV. Results and Discussion

Abstract:
 In this study, current density-voltage (J-V) relation in dye-sensitized solar cells (DSSCs) has been derived from simplified form of the standard equivalent circuit model. Current density-voltage (J-V) relation of an equivalent circuit for DSSC, which gives a more accurate data and well fitted to the experimental J-V curves and good agreement. Furthermore, the J-V curve is observed that the measurement of J-V curve devoid of the consequence of the series resistance which enhances the squareness of the J-V curve along with both J_{sc} and V_{oc} remain same as before and demonstrating a potential scope to raise the fill-factor (FF) along with the conversion efficiency (η) of the DSSC by reducing the consequence of RS

Published in: 2017 International Conference on Energy, Communication, Data Analytics and Soft Computing (ICECDS)

More Like This

The Influence of Different Annealing Temperatures on Graphene-Modified TiO₂ for Dye-Sensitized Solar Cell
 IEEE Transactions on Nanotechnology
 Published: 2016

Investigation of properties for dye-sensitized solar cells in series-parallel connection modules
 2018 IEEE International Conference on Applied System Inventon (ICASI)
 Published: 2018

Show More

Feedback

Handwritten signature or mark

Conferences > 2017 International Conference

Recent advances & perspectives in electron transport layer of organic solar cells for efficient solar energy harvesting

Publisher: IEEE [Cite This](#) [PDF](#)

Pooja Agnihotri; Swati Sahni; Sanjay Iwari [All Authors](#)

270 Full Text Views



Back to results

Need Full-Text
access to IEEE Xplore for your organization?
[CONTACT IEEE TO SUBSCRIBE >](#)

- Abstract
- Authors
- Figures
- References
- Keywords

Abstract:
Organic Solar Cells (OSCs) represents as one of the most promising, economic & environmental friendly technology for solar energy conversion with ease in fabrication & minimal material usage. To become competitive in future, new innovations & breakthroughs are needed to enhance efficiency & stability of OSCs. This review summarizes research efforts & accomplishments to push devices power conversion efficiency. We address how the recent developments of the materials of photoactive layer, electron & hole transporting layer (ETL & HTL respectively) & different contact materials are building blocks for high performance OSCs with enhanced stability. Finally, to help researchers we present a brief summary & some perspectives to understand present challenges & opportunities in this emerging area of research

Published in: 2017 International Conference on Energy, Communication, Data Analytics and Soft Computing (ICFCDS)

IEEE Authors:
Increase Your Res [Feedback](#)

45

Solution processed solar cells based on in-situ synthesis of CdSe quantum dots

Publisher: IEEE Cite This PDF

Mohan Patel, Swati Sahu, Anil Kumar Verma, Sanjay Tiwari All Authors

81 Full Text Views



Need Full-Text access to IEEE Xplore for your organization? REQUEST A FREE TRIAL

Abstract

Abstract:

Successive ionic layer adsorption and reaction (SILAR) method is one of the easiest methods to grow the quantum dots (QDs) on porous oxides for solar cell applications. In this work CdSe quantum dot sensitized solar cells (QDSSCs) were fabricated. On FTO substrate mesoporous TiO2 layer was deposited. This TiO2 layer was sensitized by in-situ synthesis and deposition of CdSe QDs. CdSe QDs were deposited by SILAR method. The QDs were grown on TiO2 by dipping the TiO2 electrode in two different precursor solutions of two different ions for defined times. Cationic precursor solution of Cd+2 ion was prepared by 0.5M Cd(NO3)2 in ethanol and anionic precursor solution of Se-2 was prepared by 0.5M SeO2 in ethanol. Quantum confinement effect was observed with each dipping (SILAR) cycle

Document Sections

- I. Introduction
II. Experiment Aisection
III. Results and Discussion

More Like This

In Situ Seeded Growth of High-Quality PbS/CdS Quantum Dots Efficient Photovoltaics IEEE Journal of Photovolt

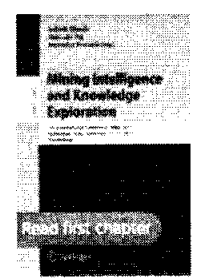
Feedback

Handwritten number 416 in a circle.



2021 | 10 | 9 | 6 | 4 | 2 | 1 | 0 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12

High-Quality Medical Image Compression Using Discrete Orthogonal Cosine Stockwell Transform and Optimal Integer Bit Allocated Quantization



Authors: Vikrant Singh Thakur, Kavita Thakur, Shubhrata Gupta
Publisher: Springer International Publishing



Published in: Mining Intelligence and Knowledge Exploration



(92)

BUY EBOOK - ₹5,888.20

Get this book in print



Mining Intelligence and Knowledge Exploration: 5th International Conference ...

edited by Ashish Ghosh, Rajarshi Pal, Rajendra Prasad

High-Quality Medical

About this book

My library

My history

Books on Google Play

Terms of Service



Downloaded from Google Books

SolutionProcessed...pdf

High-Quality Medical Image Compression Using Discrete Orthogonal Cosine Stockwell Transform and Optimal Integer Bit Allocated Quantization

Vikrant Singh Thakur¹, Kavita Thakur², and Shubhrata Gupta¹

¹ Department of Electrical Engineering, National Institute of Technology, Raipur 492010, India
vikrant.s.t@gmail.com

² S.O.S. in Electronics and Photonics, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur 492010, India

Abstract. Communication of the medical image and videos has now raised as a vital concern for the telediagnosis of critical diseases. Currently, JPEG and JPEG2K codecs are the default compression tool to facilitate their communication over band-limited channels. However, most often, the performance of these existing codecs is found poor particularly at the higher compression levels. Hence, this paper presents a new medical image compression codes to achieve high-quality compression of the medical images, especially at the higher com-

1/18



Contamination of arsenic and heavy metals in coal exploitation area

R. Sharma



Ankit Yadav

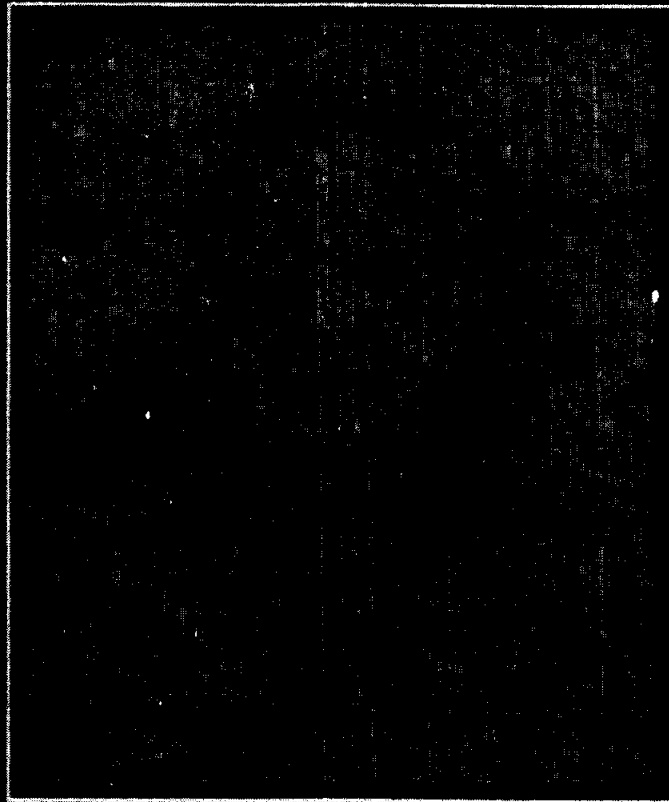


Shobhana Ramteke



Suryakant Chakradhari

**RECENT ADVANCES IN LIBRARY
AND INFORMATION SCIENCE
IN DIGITAL ERA
PROFESSOR A. K. VARMA
FESTSCHRIFT**



**Edited by
Dr. Jitendra Shrivastava**

50

Contents

Editorial	ix
Foreword	xi
List of Contributors	xiii
1 Professor Avadhesh Kumar Varma: A Biographical Sketch Dr. Jitendra Shrivastava	1
BIBLIOMETRIS, CITATION ANALYSIS, LOTKA'S LAW	
2 An Analysis of the Citation Pattern of the Doctoral Dissertation in the Field of Chemistry in C.S.J.M. University, Kanpur (U.P) Mr Arun Kumar, Dr Sarita Verma	3
3 Author Productivity and validity of Lotka's Law in History Literature in the Universities of Chhattisgarh Dr. Preeti Rani Mishra Dr. (Smt.) Maya Verma	16
4 Annals of Library and Information Studies, 2011-2015: A Bibliometric Study Mr. Mahendra Kumar, Prof. Sudhir Kumar	30
5 Assessment of Academic Research output during 1965-2015: A Case study of JNKVV, JABALPUR and RVSKVV, Gwalior in the field of agricultural economics Dr. Ramnivas Sharma, H. C. Bharvey, Pradeep Kumar Dixit	40
6 Publication Productivity of Agricultural Universities in India Siddarth Nayak, Preeti Sagar Nayak, V. Pandey, S.K.Jain	51
APPLICATION OF MOBLIE AND INFORMATION TECHNOLOGY IN LIS SERVICES, OPEN SOURCE SOFTWARE	
7 Application of Mobile Technologies in Library Services Ravindra Mohan, Sandeep Srivastav, Amit Gupta	73
8 ICT Implications for Better Inclusion in Library Dr Anil Kumar Jharotia	78
9 The World's Biggest Tech Giants Google: Its amazingly useful known and unknown 100+ Services Dr. Gautam Soni, Dr Neerja Verma	86

Author Productivity and Validity of Lotka's Law in the History Literature in the Universities of Chhattisgarh

Dr. Preeti Rani Mishra
Dr. (Smt.) Maya Verma

Introduction

Bibliometrics is applied as a popular technique by the information scientists to study the characteristics of subjects and nature of citations in different branches of knowledge. The Bibliometrics study involves in various aspects of documents used to identify the pattern of publication, coverage of journals, citations and authorship. It is also involves the process of collection counting analysis and interpretation of citation given in the printed documents. Bibliometrics was expanded in two dimensions that is quantitative qualitative study of Bibliometrics phenomena. The quantitative analysis developed three basic laws of Bibliometrics that is Lotka's law, Zipf's law and the Bradford law.

Aims and objectives

The major objectives of the study are the following :

1. Ranking list of cited Authors
2. Productivity of authors by applying Lotka's law

Methodology

The data for this study were gathered from PhD thesis of history subject in the Universities of Chhattisgarh. Multi-authored books were counted and analyzed to be able to determine the most productive authors as well as the most collaborative authors. The number 10 was chosen to serve as a yardstick for measuring the most productive as well as the most collaborative authors. The 10 most productive and the 10 most collaborative were counted. The Spearman rank correlation coefficient was adopted for correlating ranked data in order to determine the correlation between the productive authors and the collaborated authors.

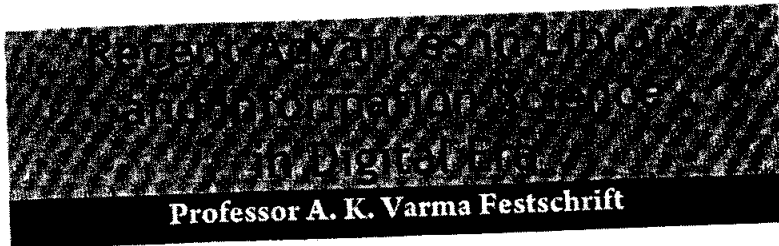
Table No. 1
Ranking List of Authors

Rank No.	Author's Name	No. of Citations
1	Ramendra Nath Mishra	172
2	Prayag Dutta Shukla	152
3	Hiralal Rai Bahadur	142

50

SPE
(Book 11)

115



Professor A. K. Varma Festschrift

Edited by
Dr. Jitendra Shrivastava

Language Editor
Dr. Devendra Kumar Gupta



PRATEEKSHA

PRATEEKSHA PUBLICATIONS

Jaipur (India)

(5)

Contents

Editorial	ix
Foreword	xi
List of Contributors	xiii
1 Professor Avadhesh Kumar Varma: A Biographical Sketch Dr. Jitendra Shrivastava	1
BIBLIOMETRIS, CITATION ANALYSIS, LOTKA'S LAW	
2 An Analysis of the Citation Pattern of the Doctoral Dissertation in the Field of Chemistry in C.S.J.M. University, Kanpur (U.P) Mr Arun Kumar, Dr Sarita Verma	3
3 Author Productivity and validity of Lotka's Law in History Literature in the Universities of Chhattisgarh Dr. Preeti Rani Mishra Dr. (Smt.) Maya Verma	16
4 Annals of Library and Information Studies, 2011-2015: A Bibliometric Study Mr. Mahendra Kumar, Prof. Sudhir Kumar	30
5 Assessment of Academic Research output during 1965-2015: A Case study of JNKVV, JABALPUR and RVSKVV, Gwalior in the field of agricultural economics Dr. Ramnivas Sharma, H. C. Bharvey, Pradeep Kumar Dixit	40
6 Publication Productivity of Agricultural Universities in India Siddarth Nayak, Preeti Sagar Nayak, V. Pandey, S.K.Jain	51
APPLICATION OF MOBILE AND INFORMATION TECHNOLOGY IN LIS SERVICES, OPEN SOURCE SOFTWARE	
7 Application of Mobile Technologies in Library Services Ravindra Mohan, Sandeep Srivastav, Amit Gupta	73
8 ICT Implications for Better Inclusion in Library Dr Anil Kumar Jharotia	78
9 The World's Biggest Tech Giants Google: Its amazingly useful known and unknown 100+ Services Dr. Gautam Soni, Dr Neerja Verma	86

5

10	KOHA-Why Every Where A Call for KOHA? Govind Singh, Manoj Mehta	100
11	Design of Web Page for Chhattisgarh state university libraries: Identification and Information Content Dr Harish Kumar Sahu	106
12	Open Source Software for Library Management: A better initiative for making Digital Library Dr Nidhi Srivastava, Dr Manoj Tiwari	115
13	Metadata Harvesting? How it is useful in Information anagement Process Dr. Santu Ram Kashyap, Shalendra Singh Kushwah	126
INSTITUTIONAL REPOSITORIES. WEB TOOLS. CONSORTIA, OPEN ACCESS		
14	Open Access Initiatives in India: Challenges, Issues and Implications Dr.H.B Nandwana , Dr Jitendra Shrivastava	133
15	Institutional Repositories: special reference to RAMAN Research Institute Digital Repository Mr. Kundan Jha	150
16	Institutional Repository: A newly developed concept for institutions in India Dr.Sarita Verma, Shraddha Shahane	165
17	E-journals of Education in UGC INFONET Digital Library Consortium Dr. S.P. Sood, Rohit Nandwana	189
18	Information Resource Sharing and Web based Services for Libraries: Recent Trends and Technologies Vineeta Chauhan	197
INFORMATION STORAGE AND RETRIEVAL, INFORMATION LITERACY, KNOWLEDGE MANAGEMENT		
19	Information Retrieval through Federated Search Dr. Anil Kumar Dhiman	205
20	Tacit Knowledge Management in Libraries Dr. Arvind K Sharma	213
21	Tools for Information Literacy Instruction in Web 2.0 Environment: An Overview Naheem K.T.	221
22	Information Literacy for Empowering Citizens Dr. Rajwant Kaur	229

S.
Kashyap

Metadata Harvesting? How it is useful in Information Management

Dr. SantuRamKashyap
Shalendra Singh Kushwah

Metadata

Metadata term is used by Philip Bagley in 1968 his book "Extension of programming language concepts". In today's Information Technology scenario Metadata is very common term. Metadata is nothing but data about data or information about information. Metadata is a powerful tool which is useful to retrieve and access required information through internet. In the age of information explosion bundle of information available on internet, most of them are useless. In this situation metadata plays key role. It works as cataloguing to find specific information for users.

Metadata summarizes basic information about data, which can make finding and working with particular instances of data easier. For example, *author*, *date created* and *date modified* and *file size* are examples of very basic document metadata. Having the ability to filter through that metadata makes it much easier for someone to locate a specific document.

According to Search engine optimization (SEO) glossary "Metadata is data that describes other data. Meta is a prefix that in most information technology usages means an underlying definition or description."

Metadata is defined as the data providing information about one or more aspects of the data, such as:

- Means of creation of the data
- Purpose of the data
- Time and date of creation
- Creator or author of the data
- Location on a computer network where the data were created
- Standards used

Harvesting

In the Open Archives Initiative context, harvesting refers specifically to the gathering together of metadata from a number of distributed repositories into a combined data store. The primary focus of the OAI has been technical and the nature of its work so far is an application-independent specification for metadata harvesting known as

Published by:

Mrs. Pushpa Sharma

PRATEEKSHA PUBLICATIONS

704, (Basement) Baraf Khana, Near Sindhi Colony

Raja Park, Jaipur-302004. (Rajasthan) INDIA.

Phone: 0141- 6501617, 2669280 ● Email: prateekshapublications@gmail.com

All rights reserved. No part of this work may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, microfilming, recording or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner & the publisher.

This book has been published in good faith that the work of the author is original. All efforts have been taken to make the material error-free. However, the authors, editors & publishers disclaim responsibility for any inadvertent errors.

First Published: 2017

© Editors

ISBN: 978-93-83662-42-5

Price: ₹ 995.00

Cover Page Designed by: Dr. Neena Khare
Language Editor: Dr. Devendra Kumar Gupta

PRINTED IN INDIA

Printed at: The Diamond Printing Press, Jaipur

10	KOHA-Why Every Where A Call for KOHA?	100
	Govind Singh, Manoj Mehta	
11	Design of Web Page for Chhattisgarh state university libraries: Identification and Information Content	106
	Dr Harish Kumar Sahu	
12	Open Source Software for Library Management: A better initiative for making Digital Library	115
	Dr Nidhi Srivastava, Dr Manoj Tiwari	
13	Metadata Harvesting? How it is useful in Information anagement Process	126
	Dr. Santu Ram Kashyap, Shalendra Singh Kushwah	
INSTITUTIONAL REPOSITORIES, WEB TOOLS, CONSORTIA, OPEN ACCESS		
14	Open Access Initiatives in India: Challenges, Issues and Implications	133
	Dr.H.B Nandwana , Dr Jitendra Shrivastava	
15	Institutional Repositories: special reference to RAMAN Research Institute Digital Repository	150
	Mr. Kundan Jha	
16	Institutional Repository: A newly developed concept for institutions in India	165
	Dr.Sarita Verma, Shraddha Shahane	
17	E-journals of Education in UGC INFONET Digital Library Consortium	189
	Dr. S.P. Sood, Rohit Nandwana	
18	Information Resource Sharing and Web based Services for Libraries: Recent Trends and Technologies	197
	Vineeta Chauhan	
INFORMATION STORAGE AND RETRIEVAL, INFORMATION LITERACY, KNOWLEDGE MANAGEMENT		
19	Information Retrieval through Federated Search	205
	Dr. Anil Kumar Dhiman	
20	Tacit Knowledge Management in Libraries	213
	Dr. Arvind K Sharma	
21	Tools for Information Literacy Instruction in Web 2.0 Environment: An Overview	221
	Naheem K.T.	
22	Information Literacy for Empowering Citizens	229
	Dr. Rajwant Kaur	

Design of Web Pages for Renowned Chhattisgarh State University Libraries: Identification of Information Content

Dr. Harish Kumar Sahu

Abstract

Present Era the World Wide Web is a tool of navigational on the Internet that enables browsing of information linked to other related information. Web site helps in accessing universe of knowledge irrespective of their location. With the easy help of WWW and related Internet technologies any organization and institution can make their presence on the Internet. Objectives of this study are to analyze University Library Web Sites, their information content, library and its activities, for providing information services available on-line, for promotional aspects, for giving links to relevant important sites and for collecting feedback from users. The University Library's Web Site should also support the mission to strengthen and enhance the University's research, teaching, learning and public service programs by facilitating easy access to varied information and resources. Considerable attention should also be given to (a) Organization of information. Less time for page to load the browser (b) Less time to read or download (c) Current information and (d) Less time for page to load the browser. This paper will discuss the information content of the University Library Web Page and the organization of information so as to make the Web site a successful Web Site after a brief survey of five renowned Chhattisgarh state based University Library Web Sites.

1. Introduction

Web Sites are a means of publicity for organization hosting the page. A web page has link, so that user can move easily between pages in the Web Site, or jump to another related sites. In creating official web page of a University Library considerable thought should be given to determine the kind of information and its presentation on successful Web Page.

2. The Web Site Planning

The Information included in a University Library is quite varied. While planning a University Library Web Site some criteria should be worked out e.g. objectives and aims, audience, information content, goals and structure of Web Site etc.

5

MANAGING LIBRARY IN ELECTRONIC ERA: Principles and Practice

Editors

**Surendra Sethy
Rabindra Kumar Mahapatra**



Ess Ess Publications
New Delhi



**MANAGING LIBRARY IN ELECTRONIC ERA:
Principles and Practice**

Copyright © by Editors

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any electronic or mechanical means including information storage and retrieval systems without permission in writing from the publisher, except by a reviewer, who may quote brief passages in a review.

While extensive effort has gone into ensuring the reliability of information appearing in this book, the publisher and editors make no warranty, express or implied on the accuracy or reliability of the information, and does not assume and hereby disclaims any liability to any person for any loss or damage caused by errors or omissions in this publication.

ISBN: 978-81-933597-5-4

First Published 2017

Published by:
Ess Ess Publications
4831/24, Ansari Road,
Darya Ganj,
New Delhi-110 002.
INDIA
Phones: 23260807, 41563444
Fax: 41563334
E-mail: info@essessreference.com
www.essessreference.com

Cover Design by *Patch Creative Unit*

Printed and bound in India at Salasar Imaging Systems.

Contents

<i>Foreword</i>	vii
<i>Preface</i>	ix
1 Emerging Mobile Technology and Mobile Users in Academic Libraries <i>Basanta Kumar Das</i> <i>Sanjay Kumar Karn</i>	1
2 Digital Preservation Methods and its Merits and Demerits <i>Muthumathi Dharuman</i>	25
3 Digital Preservation: Planning, Strategies and Trends <i>Rajesh Kumar Singh</i>	42
4 Guidelines for Digital Preservation Policy <i>K. Nazeer Badhusha</i>	65
5 Electronic Library: Librarian in Changing Activities <i>Harish Kumar Sahu</i>	88
6 Exploring E-resources in Modern Academic Libraries: A Study <i>Sunil Kumar Satpathy</i>	97
7 Negotiating Issues Related to License Agreements for Electronic Resources in Digital Environment: An Analytical Study <i>Prof. Subarna Kr. Das</i>	106
8 Role of E-resources Sharing in Rural Academic Development <i>Nidhi Gupta</i>	114

5

Electronic Library: Librarian in Changing Activities

Harish Kumar Sahu*

ABSTRACT

This paper attempts the concept of electronic library is information stored electronically and made accessible to users through electronic systems and networks. One of the central tenets of the electronic library is the delivery of information, whenever required, to the user's desktop, wherever that may be. Library professionals therefore, will increasingly need to provide their services in some electronic form rather than accept face-to-face contact with their users. As academics become more willing and more accustomed to using electronic information on a regular basis, they will become increasingly dependent on technology for information access. An additional factor is that in networked environments, information providers can supply their information directly to the end-user and so bypass the library entirely. Thus the move to an electronic information environment will radically alter the way in which a library operates and interacts with its users, and library professionals will need to consider their own future role as intermediaries. It will form a crucial part of an

* Assistant Professor, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)

1

3.4.6

1

3.4
17

MBA
11/12

Digital Payments-Weighing its pros and cons in terms of Government and Citizens

Mr. Abhay B. Rathore

Assistant Professor Govt. BSD College, Kunkuri (Jashpur), CG

Dr. S. K. Indurkar

Assistant Professor Institute of Management Pt. R. S. University Raipur CG

Abstract

While Singapore which marks 61% of Cashless Transactions (as per Master Card Advisors Making Cashless Society Report, 2016) of can't be compared with India where only 2% of Cashless Transactions of total volume of economic transactions are done, there's an increased inclination towards digital payments after the demonetization move by Hon. PM Narendra Modi. People are valuing the easiness of doing transactions through various POS, E-wallets (e.g. PayTM, SBI Buddy etc) as well as there has been a surge in applications for Online Banking from customers. Prepaid Cards such as Pockets by ICICI Bank also has been in the new preferred choice of prepaid wallets. Yet there are challenges in terms of Digital Literacy, building secured e-infrastructure which needs to be taken care. Amidst the wave of Demonetization and its discomforts and push towards Digital Payments the paper peeps into the many challenges for digital payments.

Keywords: Demonetization, cashless transaction, digital payment

Introduction

In a country marked by 68.4% cash transactions and value of such transactions seizing of total transactions, a move by Hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi, slashing out of Rs. 1,000- notes and Rs. 500- notes and pushing countrymen towards cashless payments are considered a brave move. The reserve money to the broad money ratio — an indicator on the scale of cash in circulation — is around 0.18 for India, which is very high. If compared with developing country peers, India's ratio is three-and-a-half times that of China's, triple than of Brazil, and double that of Mexico.

If we peep into the mindsets of people here in India, we frequently come across the motives of collecting cash in paper form as it signifies the materiality attached to it in terms of value. Moreover, this sentiment of value attached to only paper form is deep rooted. Given all major benefits of safe, secure, unspoiled electronic form of currency we still forward reasoned of sticking to cash transactions. These very sentiments can be traced during the scenario of cash withdrawal limits by RBI. People came out with reasons of functions at marriage, daily shopping, hospitals, etc.

The major benefit of digital payments is its traceability. We can figure out the parties involved to the money transferred. This becomes a great barrier to the hands of people who want to have unaccounted earnings collected. The second wholesome benefit of digital payments is its easiness of handling and safety of money transferred through digital mediums doesn't bear the risk of being continued physically. It can't get spoiled or can be damaged.

Thinking in terms of Government and Public Administrations digital payments is very cost-effective in terms of printing and handling of paper currency.

However, while discussing the great merits of digital payments, we should also not overlook our illiterate and level of digital literacy in India. The digital penetration is as low as 34.8% as per internetlive.com. The number of mobile phones in India has crossed 1 billion in Jan 2016 as per TRAI Report. The level of digital literacy is still at its nursery level. The grave concerns regarding the implementation of digital payment's campaign, it can be acclaimed that India along with its missionary institution MITI has made a remarkable attempt in catering different ways of digital payments.

54

Customers Susceptibility towards Reference Groups: An Empirical Analysis

Sanskriti Joseph, G.K. Deshmukh and S.K. Indurkar
Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

ABSTRACT

Man is a social being. Therefore, all the decisions taken by men are influenced by society at large. The objective of the present study is to understand the influence of reference group existing in the society on the buying behavior of consumers. Kindle eBook Reader have become a necessity for consumers across globe. The researchers have tried to examine the influence of reference group on Smartphone users and their susceptibility towards informational, utilitarian and value expressive influences of reference group by collecting data from 100 respondents across the city of Raipur. The data was collected through schedule and was analyzed by using SPSS. The findings of the study reveal that there is significant difference among consumers with respect susceptibility to reference group influence.

Keywords: Consumers' Susceptibility, Influences, Reference Group

INTRODUCTION

Consumers are the kings of the markets who determine the fate of companies across globe. Every individual at some or the other point of time is either customers or consumers irrespective of their country, religion, caste or ethnicity. All individuals are different therefore all consumers are different, but researchers across globe have tried to classify consumers in different categories on the basis of similarities in their behavior. Buying is a process through which consumers passes through a series of steps before making a buying decision. It is initiated by a felt deprivation or expectation of specific satisfier for which the consumer or want of a customer fundamentally leads to information search to identify the products or services which can provide viable solutions to the defined problems.

Information is available in the market. Information is available namely through two sources (i) marketer dominated sources and (ii) non-market dominated sources. Marketer dominated sources are basically application of promotion tools like advertisement, leaflets and brochures etc. by a marketers to attract a customer. Further non marketer dominated sources is related with availing information from people whose opinion we value while taking a decision. The people who fall under the circumference of non marketer dominated sources are referred to as reference group. Hyman (1942) coined the concept of reference group and defined reference group as a *group that influences the attitude of those individuals who use it as a reference point for evaluating their own situations*. Further Bourne (1957) added more dimensions to the concept and referred *Reference Group as a group which gives a reference, support or information of any product/service which help in taking decision on it*. According to Blackwell, Miniard and Engel (2001) reference groups can be analyzed by studying the impact of these groups on decision making process of individuals. Widing *et al.* (2003) broadened the concept and included institutions, groups and people as reference groups whose behavior values and opinions can be used as a point of reverence while taking purchase decisions.

Profiling Social Customer: A Study

Dr. G.K. Deshmukh, Dr. Sanskrity Joseph and Dr. S.K. Indurkar
*Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University,
Raipur, Chhattisgarh, India*

ABSTRACT

This is an empirical, view type paper. The purpose of the study is to understand the concept of social customer and profile them according to the distinct characteristics exhibited by them with reference to their influence regarding social media influence on buying behavior. The authors have discussed their viewpoints in reference to influence of social media on buying behavior of customer after collecting data from primary sources and empirically analyzed the data to draw important conclusions. The key findings of the study highlights that social customers can be identified in four distinct categories namely: Developers, Diffusers, Drivers and Deniers based on their usage of social media and use of social media for the purpose of referencing and acting while taking purchase decisions. This is a fairly original paper which discusses the profile of social customers based on their distinct characteristics and analyses the behavior of each cluster of social customer.

Keywords: Social Customer, Social media, Developers, Diffusers Drivers and Deniers

INTRODUCTION

Consumers are social beings who communicate with one another to understand and express their feelings and thoughts. Communication takes place through formal and informal medium with one another. Communication means and channels have seen renaissance in the recent times due to advent and development of internet. The growth of internet is all pervasive and can be felt through the increased users of internet. Internet World Stats (2016) while analyzing the growth of internet users indicated that the increase in number of registered user of internet rose to 3631 million in comparison to 360 million users in the year 2000. They further highlighted that the highest number of registered users were found in Asian subcontinent and the contribution of Indian users was abbreviated to 462 million in 2016. The all-pervasive spread of internet has led to growth of virtual markets which is often termed as social commerce. Liang, and Turban (2011) opined that social commerce is the marriage of two individually different concepts namely ecommerce and social media platforms. Social commerce deals in performing all kinds of commercial activities by using social media platforms. The growth of social media and its easy accessibility through mobile handsets have enabled the marketers to reach the desired customers in virtual markets as well without developing a brick and mortar setup and establishing a large dealer network. Hajli (2015) commented that social media platforms are no longer simple web addresses on web 2.0 rather they have emerged as shopping services which helps in developing customer network across web who are engaged in discovering, recommending rates and quality of products and services to be purchased on web. Park, Shin, and Ju (2014) and Goh, Heng and Lin (2013) have identified two widely categorized types of social commerce which explains the correlation between ecommerce and social media namely.

1. Social networking sites that are used as tools of promotion mix and
2. E-commerce websites that provide links on social media platforms to enable customers to interact with company professionals or other users.

Investigating SERPERF of Financial Institutions: A Study

Dr. S.K. Indurkar, Dr. Sanskrity Joseph and Dr. G.K. Deshmukh

*Institute of Management
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur*

ABSTRACT

In the era of service revolution, service quality has indeed become a differentiating factor which distinguishes one financial institution from another. Management of service quality has therefore become an important strategic concern for financial institutions across all corners of the globe. The service sector is tremendously huge and diverse in the present scenario. This includes services like banking, insurance, transportation, hotel, healthcare, entertainment, accounting, legal consultancy, hospitality, communication and many more which can be provided on social as well as commercial basis. If an organization needs to be globally competitive, it should produce products and services of superior quality at competitive prices and on time as demanded by the customers. The survival of the firm depends on its ability to produce the best quality product or service by maximising customer satisfaction. Chatterjee (1993) opined that the winners of tomorrow are those who are today paying attention to quality and customer service. Garabarty, Whitten and Green, (2007) opined quality of services as the "conformance to customer wishes in the delivery of a service".

The purpose of the study is to empirically measure the quality management practices of selected financial institutions across and within financial service sector in the state of Chhattisgarh so that it can help to understand how they are managing their services to cope with growing customer expectations, increasing competition on service quality performance parameters like reliability, responsiveness, assurance, empathy and tangibility.

The findings of the study reveal that banking service experiences, maximum service performance gaps on assurance parameter. The security and brokerage companies' experiences, maximum service performance gap on empathy parameter whereas insurance companies experience service performance gap in all the service quality dimensions i.e. tangibility, reliability, responsiveness, assurance and empathy respectively in insurance sector.

Keywords: SERPERF, Tangibility, Reliability, Responsiveness, Assurance and Empathy

INTRODUCTION

In the era of service sector evolution and revolution, service quality has indeed become a differentiating factor which distinguishes one financial institution from another. Management of service quality has therefore become an important strategic tool for financial institutions across all corners of the globe. The service sector is tremendously huge and diverse in the present scenario. This includes services like banking, insurance, transportation, hotel, healthcare, entertainment, accounting, legal consultancy, hospitality, communication and many more which can be provided on social as well as commercial basis. If an organization needs to be globally competitive, it should produce products and services of superior quality at competitive prices and on time as demanded by the customers. The survival of the firm depends on its ability to produce the best quality product or service by maximising customer satisfaction. Chatterjee (1993) opined that the winners of tomorrow are those who are today paying attention to quality and customer service. Garabarty, Whitten and Green, (2007) opined quality of services as the "conformance to customer wishes in the delivery of a service".

Lehtinen and Lehtinen (1991) in their study, identified that service quality could be obtained from the association between the customer and the components of the service.

ST



Proceedings of International Conference on Strategies in
Volatile and Uncertain Environment for Emerging Markets
July 14-15, 2017
Indian Institute of Technology Delhi, New Delhi
pp.418-427

From Idea to Successful Business Innovation: A Study

G. K. Deshmukh¹ and Sanskrity Joseph²

Abstract

Purpose: The purpose is to study the factors influencing adoption and diffusion of innovation of Paytm amongst customers in the city of Raipur, Chhattisgarh, India.

Design/methodology/approach: Authors have done empirical research and analyzed the data gathered through primary sources using logistic regression and discussed their viewpoints.

Findings: It was found that innovative feature in a product or service, influence adoption and diffusion of innovation. Further it was also found that education has significant role in formation of intention to adopt.

Originality/value: This is a fairly original paper which studies and discusses adoption of innovation.

Keywords: Adoption, Diffusion, Innovation, Intention, Logistic Regression

1. Introduction

A marketable innovation is a result of continuous invention or a chance discovery. A discovery is a chance which depends on favorable luck but an invention is a result of continuous endeavors on part of stakeholders like government, academic institutions, scientific laboratories and companies. Ironically developing countries who have understood the importance of innovation are steadily making progress to improve their innovation index but are trailing behind in developing a proper framework for innovation. Pullakat (2016) highlighted that India, has improved its global innovation index ranking from 81st position in 2015 to 66th position in 2016 holding the highest rank in central and southern Asia. A close analysis of top five economies according to global innovation index namely Switzerland, Sweden, United Kingdom, United States of America and Finland disclosed that they have holistic framework in terms of education and infrastructure for better translation of research outputs into business ventures. The Indian government with policy framework like Make in India, startup India and Skill India are providing support to bridge the gap in converting a good invention into a marketable innovation. Indian academicians and researchers across time frame have invariably highlighted that Indian innovators and entrepreneurs face multitude of problems related with insufficient funding, lack of government initiatives and non availability of network of venture capitalist that can help them in translating their dreams into a working profit making projects.

1. Assistant Professor, Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur Chhattisgarh, India
2. Assistant Professor, Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur Chhattisgarh, India

9

9

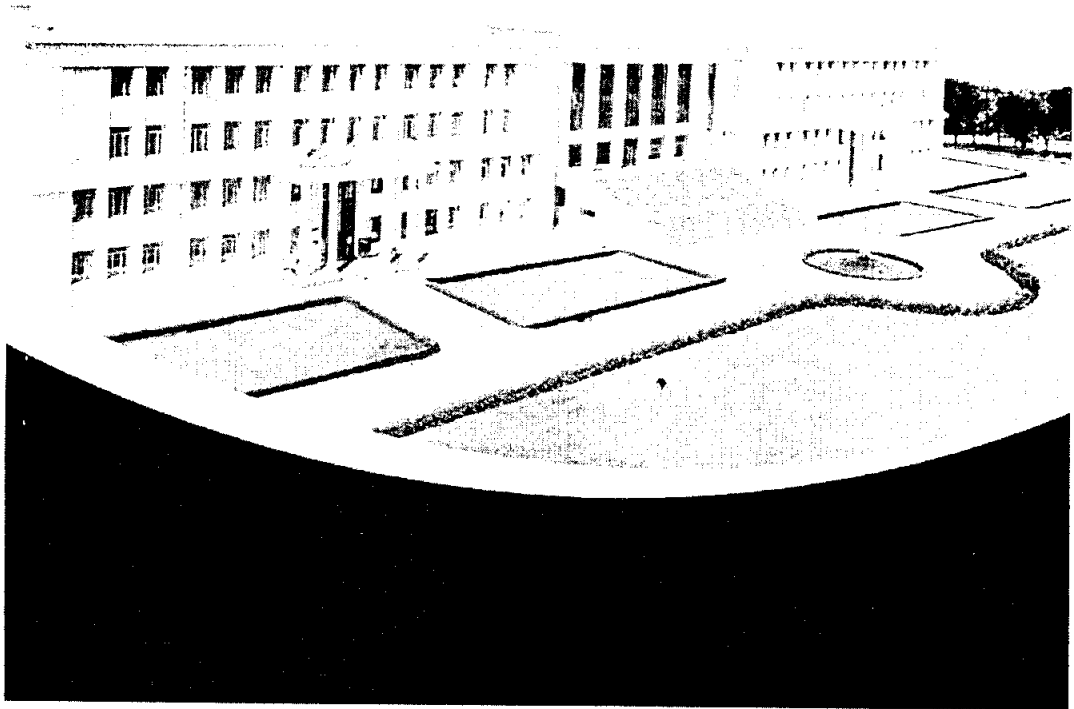


AMITY
UNIVERSITY
— CHHATTISGARH —

PARADIGM SHIFTS IN BUSINESS PRACTICES AND TECHNOLOGY

PARADIGM SHIFTS

IN BUSINESS PRACTICES AND
TECHNOLOGY



14

(5) (M)

Conceptualizing Corporate Reputation: An Empirical Analysis

G. K. Deshmukh¹, Sanskrity Joseph²

^{1,2}*Assistant Professor, Institute of Management,
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur*

Abstract

Corporate Reputation (CR) is the qualitative outcome of a company's strategic orientation (STO). It is an outcome of long-term planning and implementation of continuous of interrelated activities as perceived by stakeholders. Researchers, academicians, and professionals have tried to study the concept and impact of CR. The present study tries to empirically define the concept of CR by identifying its underlining elements, such as STO of corporate, social obligation of corporate, and value proposition of corporate. Further, the study tries to correlate customer's perception of CR on the performance of company in terms of trust, brand loyalty, and repatronage intention.

Keywords:

Corporate Reputation, Strategic Orientation, Social Obligation, Value Proposition, Brand Loyalty, Re Patronage Intention

Introduction

The concept of corporate reputation (CR) has attracted academicians, researchers, and practitioners since time immemorial. CR is an abstract term which is a result of combination of host of factors that keep evolving and changing from time to time. CR or goodwill as mentioned in books of accounts is considered as a fictitious asset which plays an important role in attracting and retaining almost all stakeholders of business. Kay (1995) in his study underlined the premise that CR is an important indicator of business performance. Academicians, researchers, and practitioners have, therefore, understood that CR is that qualitative aspect of business which directly or indirectly influences the quantitative indicators of business performance. In practice, CR is a complex strategic decision which is related with various concepts which helps in distinguishing one corporate from another as per the perception of stakeholders in competitive environment. Nisbett and Ross (1980) highlighted that marketing practices related with creation of brand or corporate identity are often linked with CR which leads to creation of misleading premise and judgments which is often short term and changes with the short-term goals of companies. Later on the companies' relationship with its stakeholders is also considered as a barometer to judge and establish CR. The CR of a company is often judged in terms of its financial dealings by financial institutions and credit-rating agencies. Diamond (1991) underlined that money lending institutions often assess the credit worthiness of companies in order to assess its CR. The companies which are able to create an impression that they are just and fair while undertaking a financial obligation related



Riding the New Tides:
Navigating the Future
Through Effective
People Management
pp. 155-168
© FORE School of
Management, New Delhi

* Corresponding author: G. K. Deshmukh (gkd16@yahoo.co.in)



Conceptualizing Corporate Reputation: An Empirical Analysis

G. K. Deshmukh¹, Sanskrity Joseph²

^{1,2}Assistant Professor, Institute of Management,
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

Abstract

Corporate Reputation (CR) is the qualitative outcome of a company's strategic orientation (STO). It is an outcome of long-term planning and implementation of continuous of interrelated activities as perceived by stakeholders. Researchers, academicians, and professionals have tried to study the concept and impact of CR. The present study tries to empirically define the concept of CR by identifying its underlining elements, such as STO of corporate, social obligation of corporate, and value proposition of corporate. Further, the study tries to correlate customer's perception of CR on the performance of company in terms of trust, brand loyalty, and repatronage intention.

Keywords:

Corporate Reputation, Strategic Orientation, Social Obligation, Value Proposition, Brand Loyalty, Re Patronage Intention

Introduction

The concept of corporate reputation (CR) has attracted academicians, researchers, and practitioners since time immemorial. CR is an abstract term which is a result of combination of host of factors that keep evolving and changing from time to time. CR or goodwill as mentioned in books of accounts is considered as a fictitious asset which plays an important role in attracting and retaining almost all stakeholders of business. Kay (1995) in his study underlined the premise that CR is an important indicator of business performance. Academicians, researchers, and practitioners have, therefore, understood that CR is that qualitative aspect of business which directly or indirectly influences the quantitative indicators of business performance. In practice, CR is a complex strategic decision which is related with various concepts which helps in distinguishing one corporate from another as per the perception of stakeholders in competitive environment. Nisbett and Ross (1980) highlighted that marketing practices related with creation of brand or corporate identity are often linked with CR which leads to creation of misleading premise and judgments which is often short term and changes with the short-term goals of companies. Later on the companies' relationship with its stakeholders is also considered as a barometer to judge and establish CR. The CR of a company is often judged in terms of its financial dealings by financial institutions and credit-rating agencies. Diamond (1991) underlined that money lending institutions often assess the credit worthiness of companies in order to assess its CR. The companies which are able to create an impression that they are just and fair while undertaking a financial obligation related



Riding the New Tides:
Navigating the Future
Through Effective
People Management
pp. 155-168
© FORE School of
Management, New Delhi

* Corresponding author: G. K. Deshmukh (gkd16@yahoo.co.in)

16

16

Adoption and Diffusion of Innovation Amongst Textile Retailers in Chhattisgarh: A Study

G.K. Deshmukh¹ and Sanskrity Joseph²

INTRODUCTION

Competition is the driving force of monopolistic economy which is characterized by large number of sellers who offer heterogeneous offerings to large number of buyers. In monopolistic competition, non price competition has dominated its economy more in comparison to price competition. Heterogeneous product offerings with different features, application of all aspects of product mix and establishment of new sources of product procurement and delivery are dominating markets for establishing the point of differentiation between two sellers. The sellers are approaching diverse markets and selling more commodities to distribute their fixed cost on large number of products manufactured or distributed by them. In recent times monopolistic competition is fueled by advent of information technology. Information technology is helping the marketers to cover the untapped markets for product sourcing as well as product delivery from new, distant and dispersed markets from geographically dispersed suppliers. Further the symbiotic relationship between marketing and information technology is also helping the marketers to reach the untapped markets. The combination of information technology with market research has led to development of a scientific approach for marketers to reach different sellers and procure goods and services according to needs, preferences, and purchasing power of their target customers. Market research and information technology have paved way for many innovations. Innovation can be defined as "an idea perceived as new by the individual" (Rogers, 1983). Adoption and diffusion of innovation has become more evident and clear in monopolistic economy. Schumpeter (1939) opined that the final and last stage of development of technology must be related with diffusion of technology in the market. A large plethora of research has been conducted to understand the process of adoption and diffusion of technology. Rogers (1962) indicated that adoption and diffusion is a systematic process which can be studied in five stages namely (i) awareness, (ii) interest, (iii) evaluation, (iv) trial, and (v) adoption. Researchers have also studied the parameters which guide the process of technology adoption and diffusion. Narayanan (2001) opined that technology adoption and diffusion is correlated with developing innovation, diffusion or propagation of innovation, time required for innovation to propagate amongst different units of social systems. Change is the key to innovation. In recent times markets have witnessed introduction of large variety of new products and services. The desire for change by consumers have prompted marketers to produce better quality products.

¹ Assistant Professor, Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh
E-mail: gkd16@yahoo.co.in

² Assistant Professor, Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh
E-mail: sanskrityjoseph@gmail.com

Profiling Social Customer: A Study

Dr. G.K. Deshmukh, Dr. Sanskrity Joseph and Dr. S.K. Indurkar
*Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University,
Raipur, Chhattisgarh, India*

ABSTRACT

This is an empirical, view type paper. The purpose of the study is to understand the concept of social customer and profile them according to the distinct characteristics exhibited by them with reference to their influence regarding social media influence on buying behavior. The authors have discussed their viewpoints in reference to influence of social media on buying behavior of customer after collecting data from primary sources and empirically analyzed the data to draw important conclusions. The key findings of the study highlights that social customers can be identified in four distinct categories namely: Developers, Diffusers, Drivers and Deniers based on their usage of social media and use of social media for the purpose of referencing and acting while taking purchase decisions. This is a fairly original paper which discusses the profile of social customers based on their distinct characteristics and analyses the behavior of each cluster of social customer.

Keywords: Social Customer, Social media, Developers, Diffusers Drivers and Deniers

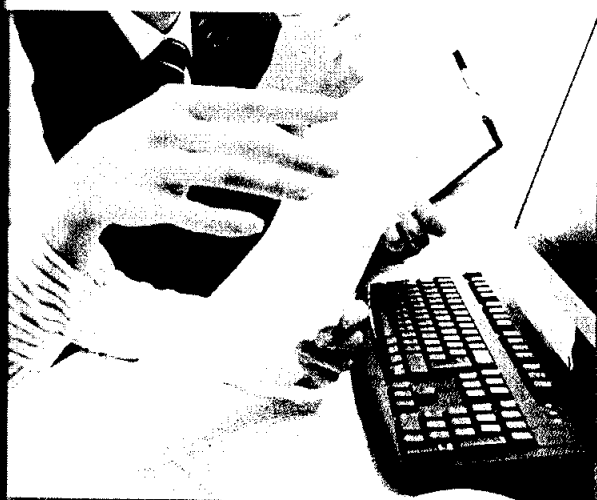
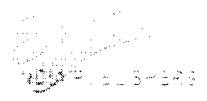
INTRODUCTION

Consumers are social beings who communicate with one another to understand and express their feelings and thoughts. Communication takes place through formal and informal medium with one another. Communication means and channels have seen renaissance in the recent times due to advent and development of internet. The growth of internet is all pervasive and can be felt through the increased users of internet. Internet World Stats (2016) while analyzing the growth of internet users indicated that the increase in number of registered user of internet rose to 3631 million in comparison to 360 million users in the year 2000. They further highlighted that the highest number of registered users were found in Asian subcontinent and the contribution of Indian users was abbreviated to 462 million in 2016. The all-pervasive spread of internet has led to growth of virtual markets which is often termed as social commerce. Liang, and Turban (2011) opined that social commerce is the marriage of two individually different concepts namely ecommerce and social media platforms. Social commerce deals in performing all kinds of commercial activities by using social media platforms. The growth of social media and its easy accesstibility through mobile handsets have enabled the marketers to reach the desired customers in virtual markets as well without developing a brick and mortar setup and establishing a large dealer network. Hajli (2015) commented that social media platforms are no longer simple web addresses on web 2.0 rather they have emerged as shopping services which helps in developing customer network across web who are engaged in discovering, recommending rates and quality of products and services to be purchased on web. Park, Shin, and Ju (2014) and Goh, Heng and Lin (2013) have identified two widely categorized types of social commerce which explains the correlation between ecommerce and social media namely.

1. Social networking sites that are used as tools of promotion mix and
2. E-commerce websites that provide links on social media platforms to enable customers to interact with company professionals or other users.

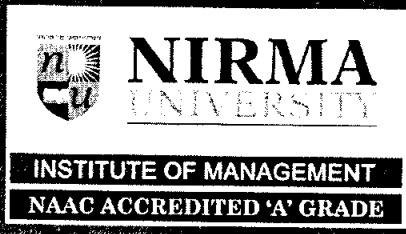
(62)

17



SERVICES IN EMERGING MARKETS

Editors
Dr. Sapna Parashar
Dr. Jayesh P Aagja
Ms. Tripurasundari Joshi



INSTITUTE OF MANAGEMENT
NAAC ACCREDITED 'A' GRADE

Institute of Management
NIRMA UNIVERSITY
Ahmedabad

Investigating SERPERF of Financial Institutions: A Study

Dr. S.K. Indurkar, Dr. Sanskrity Joseph and Dr. G.K. Deshmukh
*Institute of Management
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, India*

ABSTRACT

In the era of service revolution, service quality has indeed become a differentiating factor which distinguishes one financial institution from another. Management of service quality has therefore become an important strategic concern for financial institutions across all global corners of the globe. This is particularly service institutions because of its intangible offerings. So, the study of service quality parameters. In fact, measurement of service quality is not just limited to theoretical estimations of academicians and practical delivery of products and services.

The purpose of the study is to empirically measure the quality management practices of selected financial institutions across and within financial service sector in the state of Chhattisgarh so that it can help to understand how they are managing their services to cope with growing customer expectations, increasing competition on service quality performance parameters like reliability, responsiveness, assurance, empathy and tangibility.

The findings of the study reveal that banking service experiences, maximum service performance gaps on assurance parameter. The security and brokerage companies' experiences, maximum service performance gaps on empathy parameter whereas insurance companies experience service performance gap in all the service quality dimensions i.e. tangibility, reliability, responsiveness, assurance and empathy respectively in insurance sector.

Keywords: SERPERF, Tangibility, Reliability, Responsiveness, Assurance and Empathy

INTRODUCTION

In the era of service sector evolution and revolution, service quality has indeed become a differentiating factor which distinguishes one financial institution from another. Management of service quality has therefore become an important strategic tool for financial institution across all corners of the globe. The service sector is tremendously huge and diverse in the present scenario. This includes services like banking, insurance, transportation, hotel, healthcare, entertainment, accounting, legal consultancy, hospitality, communication and many more which can be provided on social as well as commercial basis. If an organization needs to be globally competitive, it should produce products and services of superior quality at competitive prices and on time as demanded by the customers. The survival of the firm depends on its ability to produce the best quality product or service while maximising customer satisfaction. Chatterjee (1993) opined that the winners of tomorrow are those who are today paying attention to quality and customer service. Chakrabarty, Whitten and Green, (2007) opined quality of services as the "conformance to customer wishes in the delivery of a service".

Lehtinen and Lehtinen (1991) in their study, identified that service quality could be obtained from the association between the customer and the components of the service

63

INDIA PUBLISHERS

SERVICES IN EMERGING MARKETS

Editors

Dr. Sapna Parashar

Dr. Jayesh P Aagja

Ms. Tripurasundari Joshi



**NIRMA
UNIVERSITY**

INSTITUTE OF MANAGEMENT

NAAC ACCREDITED 'A' GRADE

**Institute of Management
NIRMA UNIVERSITY
Ahmedabad**

Customers Susceptibility towards Reference Groups: An Empirical Analysis

Sanskriti Joseph, G.K. Deshmukh and S.K. Indurkar
Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

ABSTRACT

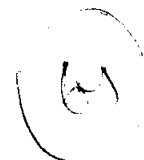
Marketing is all about buying. Therefore, all the decisions taken by men are influenced by society at large. The objective of the present study is to understand the influence of reference group existing in the society on the buying behavior of consumers. Kindle eBook Reader have become a necessity for consumers across globe. The researchers have tried to examine the influence of reference group on Smartphone users and their susceptibility towards informational, utilitarian and value expressive influences of reference group by collecting data from 100 respondents across the city of Raipur. The data was collected through schedule and was analyzed by using SPSS. The findings of the study reveal that there is significant difference among consumers with respect susceptibility to reference group influence.

Keywords: Consumers' Susceptibility, Influence, Reference Group

INTRODUCTION

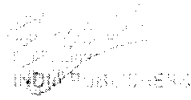
Consumers are the kings of the markets who determine the fate of companies across globe. Every individual at some or the other point of time is either customers or consumers irrespective of their country, religion, caste or ethnicity. All individuals are different therefore all consumers are different, but researchers across globe have tried to classify consumers into different categories on the basis of similarities in their behavior. Buying is a complex process through which consumers passes through a series of steps before making a buying decision. A buying decision is often a result of a felt deprivation or expectation of specific satisfier for which a consumer searches for a new or a customer fundamentally leads to information search for which he/she searches for solutions which can provide viable solutions to the defined problems.

Information is available in the market, information is available namely (i) market dominated sources and (ii) non-market dominated sources. Market dominated sources are basically application of promotion tools like advertisement, leaflets and brochures etc. by a marketers to attract a customer. Further non marketer dominated sources is related with availing information from people whose opinion we value while taking a decision. The people who fall under the circumference of non marketer dominated sources are referred to as reference group. Hyman (1942) coined the concept of reference group and defined reference group as a *group that influences the attitude of those individuals who use it as a reference point for evaluating their own situations*. Further Bourne (1957) added more dimensions to the concept and referred *Reference Group as a group which gives a reference, support or information of any product/service which help in taking decision on it*. According to Blackwell, Miniard and Engel (2001) reference groups can be analyzed by studying the impact of these groups on decision making process of individuals. Widling *et al.* (2003) broadened the concept and included institutions, groups and people as reference groups whose behavior values and opinions can be used as a point of reverence while taking purchase decisions.



MBA 17

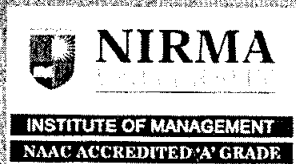
19



CONSUMER BEHAVIOUR & CONTEMPORARY MARKETING STRATEGY



Ms. Tripurasundari Joshi
Dr. Jayesh P. Agga
Dr. Sapna Parasrkar



Institute of Management
NIRMA UNIVERSITY
Ahmedabad

Skill Development in India: Challenges and Strategies

Dr. Susheel Kumar Indurkar, Sr. Assistant Professor
Institute of Management,

Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur

Dr. Abhisekh Dubey, Assistant Professor

Kushabhau Thakre Patrakarita University, Raipur

INTRODUCTION

Globalization, increase in competition and knowledge have triggered the needs for highly skill workforce in both the developed as well as in developing nations. Any countries socio and economic growth largely depend upon the skills and knowledge posses by the human capital of that country. As it has been observed that the countries which is having highly skill workforce tends to have higher economic growth and also has higher per capita income. Now a day's all the developing as well developed nation requires skilled workforce not only to boost their industrial and economic growth but also to meet the global standards of quality employment.

Education, vocational training is the main pillars of the employment, one who have education but if he/she is not having desired skill to getup the job then such education is sheer waste of time, resources and money. India being second largest populated country of the world after china and is also the home of large number of

Identifying Pied Pipers of Social Media: A Study

G.K. Deshmukh¹, Sanskrity Joseph² and Yogesh Soni³

INTRODUCTION

are not alien to one another due to distance or frequency of meeting. The penetration of land mobile telephony coupled with continuous internet access has brought individuals together in on platforms facilitating decision making. The concept of reference groups which studied the effect of referencing on buying behaviour is an expressive phenomenon which has existed in both physical and virtual markets since long decades. Hayman (1942) describes reference group as a group that influences the attitude of an individuals' by providing a reference point based on their group norms. The Hindu (2014) highlighted the fact that India will become the second largest internet market in the world by end of December 2014. *The emphasizing growth of internet has made it essential for marketers to understand the impact of virtual world on customers across the world and especially in India.* Widing et al. (2003), opined that reference groups is basically an inclusion of individuals or groups of individuals who are referred by customers for taking decisions due to commonly shared beliefs, values and opinions. *It has become interesting and challenging for marketer to identify the actual and primary reference sources to devise and draft strategies to understand the cues and motives which positively instigate a customer in varied stages of buying beginning from need recognition to purchase followed by satisfaction which influences repurchase through a platform more respectively via and titled social media.*

Social media is an internet based platform which normally takes format like blogs, discussion forums, networking sites and content communities by linking people through internet for mutual exchange of things of interest. Marketo (2010) defined social media as "the production, consumption and exchange of information through online social interactions and platforms" in *The Definitive Guide to B2B Social Media*. Marketers by and large understand that valuable information regarding their products, services and company related with process of selling and buying for benefit of either customer or company can be transmitted through social media with a fairly little cost of communication. The marketers must understand that reference groups are usually conformed by the social network of an individual: family members, friends, colleagues and inspirational figures (Baehmann et al., 1993) in either physical or virtual world, and can be a source of brand associations that mold the mental representations a consumer has of himself (Escalas and Bettman, 2003) with respect to decisions regarding pre purchase

¹Assistant Professor, Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh
 Email: gkd16@yahoo.co.in

²Assistant Professor, Institute of Management, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh
 Email: sanskrityjoseph@gmail.com

³Assistant Professor, AVS Presidency International College, Raipur, Chhattisgarh
 Email: yogesh.soni89@gmail.com

68

Recent Advances in Fixed Point Theory and Applications

Dedicated to the diamond jubilee
birth anniversary of Shyam Lal Singh

Umesh C. Gairola • Rajendra Pant
Editors

$$N(\varepsilon, A) = \{x \in X : d(x, a) < \varepsilon \text{ for some } a \in A\},$$

$$E_{A,B} = \{\varepsilon > 0 : A \subseteq N(\varepsilon, B), B \subseteq N(\varepsilon, A)\},$$

$$H(A, B) = \begin{cases} \inf E_{A,B} & \text{if } E_{A,B} \neq \emptyset, \\ 1 & \text{if } E_{A,B} = \emptyset. \end{cases}$$

ADVANCES IN
MATHEMATICS
RESEARCH

NOVA

MA PMS
3.4.6
18

In: Recent Advances in Fixed Point Theory and Applications
Editor: Umesh Chandra Gairola,
Rajendra Pant pp. 1-14

ISBN:

© 2017 Nova Science Publishers, Inc.

Chapter 15

AN APPLICATION OF FIXED POINT THEOREMS TO LOCAL ATTRACTIVITY OF CERTAIN FUNCTIONAL INTEGRAL EQUATION SOLUTIONS

*Hemant Kumar Pathak and Ekta Tamrakar,**
S.o.S. in Mathematics, Pt. Ravishankar Shukla
University, Raipur (C.G.) 492010, India

Abstract

In this paper, an application of fixed point theorem of Aghajani, Banaś and Sabzali is given to prove the existence of solution of a generalized functional nonlinear integral equation. Under certain additional condition, the local attractivity of the solutions is also shown.

Keywords: Measure of noncompactness; modulus of continuity; fixed point theorem; functional integral equation; local attractivity of solutions.

AMS Subject Classification: 45G10; 45G99.

1. Introduction

The concept of measure of noncompactness has played an important role in nonlinear functional analysis, especially in the study of metric and topological fixed point theory. It may be observed that several papers have been published on the existence and behavior of solutions of a wide class of nonlinear differential and integral equations via a measure of noncompactness.

The aim of this paper is three folds. Firstly, to obtain a generalization of Darbo fixed point theorem which compliments to fixed point result of Aghajani, Banaś, and Sabzali via a measure of noncompactness in Banach spaces. Secondly, to indicate the applicability of the obtained results to existence theorem for some nonlinear functional integral equations.

*E-mail address: hpathak05@gmail.com (H. K. Pathak), tamrakarekta@gmail.com (E. Tamrakar)

EG

आरपी यूनीफाइट

समाजशास्त्र

[SOCIOLOGY]

वी.ए. प्रथम वर्ष

समाजशास्त्र का परिचय तथा समकालीन भारतीय समाज

लेखक

डॉ. ए.पी. श्रीवास्तव

एव

डॉ. एल. एस. गजपाल

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला,
पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

वर्ष 2019-20 से प्रस्तावित नवीन पाठ्यक्रमानुसार



राम प्रसाद एण्ड संस्र

प्रकाशक

श्री जगत रूढ़ि मठ

बाल विद्या, विद्यार्थी मठ, गान्धारी

पता : 1122222222 • 11222222

www.jagadgururudhimath.com

श्री जगत रूढ़ि मठ, गान्धारी

Neither this book nor any part may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, microfilming and recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the publisher. Breach of this condition is liable for legal action.

Neither the publisher nor the author is responsible for any errors or omissions that may have appeared in this book. The publisher and the author are not responsible for any errors or omissions that may have appeared in this book.

ISBN : 978-81-85588-20-4

© प्रकाशक

मूल्य : किं. मं. प्रकाशक मठ, गान्धारी (₹25.00)

पता : श्री जगत रूढ़ि मठ, गान्धारी, गान्धारी, पिन : 422404

Handwritten signature and a circled number '6'.

आर्य समाज

समाजशास्त्र

प्रथम खण्ड

डॉ. ए. पी. श्रीवास्तव । डॉ. एल. एस. गजपाल



राम प्रसाद एण्ड सेस

[Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side of the page]

[Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side of the page]

[Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side of the page]

[Handwritten signature or initials in a circle]

85511)

यौन शिक्षा की आवश्यकता एवं उपयुक्तता



- डॉ. हेमलता बोस्कर वासनिक

68-A

Published by
A & V Publications
RJPT House, Lakshmana Grih Nirman Society,
Rohanipuram, In-front of Sector- 1,
Pt. Deendayal Upadhyay Nagar,
Raipur 492 010. (CG) India.
Phone No. +919406051618.
E. mail: avpublications@gmail.com;
Website: www.avpublication.org

यौन शिक्षा की आवश्यकता एवं उपयुक्तता

First Edition 2017

© Author

ISBN: 978-93-85525-32-2

Price: Rs. 500 / US\$ 30

The investigation carried out in this volume, the Author is not responsible for resemblance or contradiction to facts existing in social system, subsystem or components thereof, if any.

The responsibility for the facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this volume is entirely of the Author. The Publisher bears no responsibility for them whatsoever.

Printed in India

Published by Dr. Mrs. Monika S. Daharwal for A & V Publications, Raipur 492 010. (CG) India.

68-17

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

विषय सूची	पृष्ठ क्रमांक
विषय परिचय	1-6
उत्तरदाताओं का सामान्य व पारिवारिक विवरण	7-19
यौन रोग एवं यौन अपराध के संबंध में विद्यार्थियों में जागरूकता	19-75
यौन शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिरूचि	76-108
निष्कर्ष	109-111
संदर्भ ग्रंथ सूची	112-113
साक्षात्कार - अनुसूची	114-116

68-1A